International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

गांधीवाद बनाम मार्क्सवाद एक तुलनात्मक अध्ययन

अश्वनी कुमार

सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान राजकीय महाविद्यालय भैंसवाल कला सोनीपत हरियाणा

शोध सार

आधुनिक राजनैतिक विचारधाराओं में गांधीवाद तथा मार्क्सवाद का अग्रिम स्थान है। दोनों विचारधाराओं में गहरी समानता तथा असमानता दिखाई पड़ती है। महात्मा गांधी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। जिन्होंने अपनी राजनीतिक लड़ाई में सामाजिक उत्थान तथा धार्मिक विचारों का प्रयोग करके भारत को आजादी दिलाई। दूसरी तरफ कार्ल मार्क्स ने वर्ग संघर्ष और संसाधनों के वितरण की समस्या को पूंजीवादी व्यवस्था का परिणाम बताया है। दोनों विचारों ने अपने–अपने उपाय से राज्य के वर्तमान स्वरूप की बुराइयों को उजागर किया है। हालांकि दोनों ही विचारकों का अंतिम लक्ष्य वर्ग विहीन समाज की स्थापना करना था। लेकिन इन लक्ष्यों की प्राप्ति के तरीकों में कुछ बुनियादी अंतर दिखाई पड़ता है। इस शोध पत्र में दोनों विचारधाराओं के अंतर और समानताओं का विश्लेषण करके उनकी प्रासंगिकता की विवेचना की जाएगी।

मुख्यशब्दः गांधीवाद, मार्क्सवाद , वर्ग संघर्ष, पूंजीवाद

परिचयः

महात्मा गांधी और कार्ल मार्क्स दोनों ही विचारकों ने आधुनिक युग में कमजोर वर्ग के अधिकारों तथा समानता आधारिक समाज की स्थापना के लिए आवाज उठाई। जहां तक गांधीवाद की बात है तो, स्वयं गांधी भी गांधीवाद जैसी विचारधारा को मानने के लिए तैयार नहीं थे। गांधी हमेशा अपने आप को सत्य की खोज में लगे रहने वाला बताते थे। गांधी के विचारों पर धार्मिक और दार्शनिक प्रभाव देखा जा सकता है। जिसमें भारतीय परंपरा तथा यूरोपीय आधुनिकता दोनों का समागम दिखाई पड़ता है। गांधी ने श्रीमद्भागवत गीता तथा अन्य भारतीय ग्रंथो के दृष्टांतों के साथ–साथ लियो टॉलस्टॉय के विचारों को भी ग्रहण किया है। इन सभी बातों से प्रभावित होकर गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सत्य और अहिंसा आधारित राजनीतिक आंदोलन तथा सामाजिक सुधार की बात की है। दूसरी तरफ कार्ल मार्क्स की प्रेरक शक्तियों में उदारवादी व्यवस्था से असंतोष तथा पूंजीवादी व्यवस्था की बुराइयां दिखाई पड़ती है। कार्ल मार्क्स में अपने राजनीतिक जीवन में अपने विचारों से कमजोर वर्ग के लिए आवाज उठाई तथा राज्य के वर्तमान स्वरूप को पूर्ण रूप से बदलने के लिए सर्वहारा वर्ग को संगठित किया। हालांकि दोनों विद्वानों ने व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा राज्य विहीन समाज की बात को अपने दर्शन का आधार बनाया है। जिससे दोनों में समानता नजर आती है। दोनों ही विचारकों ने पूंजीवाद की बुराइयों को उजागर किया है, तथा सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्धता दिखाई। इन सभी समानताओं के विपरीत दोनों विचारको गहराई से समझाने पर पता चलता है, कि दोनों विद्वानों के विचारों में कुछ–कुछ बुनियादी अंतर हैं। सामाजिक परिवर्तन और वर्ग विहीन व्यवस्था स्थापित करने के तरीकों में दोनों विद्वानों में काफी अंतर दिखाई देता है। इसके साथ–साथ महात्मा गांधी और कार्ल मार्क्स अपनें धार्मिक विचारों तथा राजनीति में साधन और साध्य के संबंध में एक दूसरे से विरोधी दिखाई पड़ते हैं।

अध्यात्मवादी बनाम भौतिकवादी

गांधी जी ने अपने राजनीतिक संघर्ष की मुख्य प्रेरणा धर्म से प्राप्त की, हालांकि उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि धर्म के नाम पर जो आडंबर चल रहे हैं, उनका हमें विरोध करना चाहिए। गांधी धर्म को नैतिक आधार मानते हुए आध्यात्मिक कल्याण पर जोर देते हैं। जो की मानसिक संतुष्टि के लिए आवश्यक आहार है। दूसरी और मार्क्स ने धर्म को धनवान वर्ग की निजी संपत्ति की रक्षा का कवच बताया है। कार्ल मार्क्स ने धर्म को सर्वसाधारण के लिए अफीम की संज्ञा दी है। कार्ल मार्क्स ने धर्म को शासक वर्ग का हथियार बताया है। जिसके बल पर शासक वर्ग आम जनता का नैतिक रूप से शोषण करता है।

गांधी जी हमेशा आत्म संयम और कर्तव्य पालन जैसे गुणों की तरफ आकर्षित थे। उनको यह सारी प्रेरणा श्रीमद्भागवतगीता और उपनिषदों के माध्यम से प्राप्त हुई। उन्होंने इनके आधार पर अपने अपरिग्रह और सत्य के सिद्धांतों पर बल दिया। गांधी के अनुसार मनुष्य को उतना ही ग्रहण करना चाहिए, जितना तात्कालिक उपयोग के लिए जरूरी हो, आवश्यकता से अधिक धन संचय करने को गांधी जी धन की चोरी की संज्ञा देते हैं।

राज्य की प्रकृति

गांधीजी राज्य के स्वरूप के प्रति कोई विशेष सिद्धांत प्रस्तुत नहीं करते हैं लेकिन गांधी ने राज्य को ऐसा यंत्र बताया है, जो मानवीय

संवेदना और नैतिक उत्तरदायित्व से दूर है। गांधी के अनुसार शासक राज्य को व्यक्तियों पर बल प्रयोग के साधन के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। दूसरी तरफ कार्ल मार्क्स राज्य को अपने आधार और संरचना सिद्धांत के माध्यम से शोषण के यंत्र की संज्ञा देते है। मार्क्स राज्य को एक वर्ग पर दूसरे वर्ग के प्रभुत्व का साधन मानते है। मुख्य रूप से दोनों ही विद्वानों ने राज्य के वर्तमान स्वरूप को चुनौती देते हुए राज्य विहीन समाज की संकल्पना प्रस्तुत की है। लेकिन गांधी जी ने राज्य के विचार को पूर्ण रूप से विरोध नहीं किया है। उनका मानना है कि शासको के मन को परिवर्तित किया जा सकता है, तथा व्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक समरसता के माध्यम से एक राम राज्य की स्थापना की जा सकती है।

वहीं दूसरी तरफ कार्ल मार्क्स पूंजीवादी राज्य के विचार का पूर्ण रूप से खंडन करते हैं। कार्ल मार्क्स राज्य के समाप्ति के लिए वह सर्वहारा वर्ग को आह्वान करते हैं कि राज्य का जब तक आविर्भाव रहेगा तब तक शासक और जनता के मध्य वर्ग संघर्ष चलता रहेगा। भिखू पारेख अपने आलेख गांधी जी की मार्क्सवादी व्याख्या पर एक टिप्पणी के अंतर्गत लिखते हैं कि गांधी जी को विश्वास था कि राज्य को ट्रस्टीसिप सिद्धांत के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण विन्यामक और पुनर्वितरणकारी भूमिका सोपीं जा सकती है। जिसके माध्यम से निजी संपत्ति जैसी संस्था का उन्मूलन किया जा सकता है। वहीं दूसरी तरफ मार्क्स राज्य को ऐसी वितरणकारी शक्तियां देने के पक्ष में नहीं है। उनका मानना है, पूंजीवादी शक्तियां सामाजिक न्याय के स्थान पर केवल विशेष वर्ग को फायदा पहुंचाती हैं। उन्होने वैज्ञानिक समाजवाद के रास्ते से योग्यता और आवश्यकता के अनुसार भौतिक संसाधनों के वितरण की बात रखी है, जिसमें निजी संपत्ति जैसी व्यवस्था का कोई स्थान नहीं है।

प्रौद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण

गांधी के विकास के मॉडल में प्रौद्योगिकी का प्रयोग संतुलित मात्रा में शामिल है। गांधी ने प्रौद्योगिकी के उपयोग को भारतीय समाज के लिए हानिकारक बताया है । उनके अनुसार भारी मशीनों के प्रयोग हमारे कुटीर उद्योगों की उन्नति में बाधक है। गांधीजी शारीरिक श्रम के प्रति बड़े जागरूक थे उनका मानना था की, प्रतिदिन हम सबको शारीरिक श्रम करना चाहिए। भारत के कृषि प्रधान देश तथा सांस्कृतिक विरासत को देखते हुए गांधीजी प्रौद्योगिकी के प्रति आशावान नहीं थे। उनका मानना था कि प्रौद्योगिकी के ज्यादा प्रयोग से एक विशेष वर्ग को ज्यादा लाभ होगा तथा बाकी समाज में विस्तृत बेरोजगारी के साथ–साथ आर्थिक असमानता भी फैलेगी।

दूसरी तरफ कार्ल मार्क्स प्रौद्योगिकी के ज्यादा से ज्यादा प्रयोग पर बल देते थे। उनका मानना था कि ज्यादा उत्पादन के लिए टेक्नोलॉजी अनिवार्य है। मार्क्स पर अपने समय के वैज्ञानिक प्रयोग तथा प्रौद्योगिकी क्रांति का प्रभाव था। इसीलिए उन्होंने संपत्ति निर्माण और आर्थिक आवश्यकताओं को सीमित नहीं किया, लेकिन गांधीजी आवश्यकता से अधिक संपत्ति संचय को अनैतिक मानते थे। कार्ल मार्क्स उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी और मशीनीकरण पर जोर देते हैं। उनका मानना था कि औद्योगीकरण से अर्थव्यवस्था में मांग और पूर्ति का संतुलन बना रहेगा।

सर्वोदय बनाम साम्यवाद

गांधी जी मूलतः नैतिक दार्शनिक थे। आधुनिक राज्य के स्वरूप के बारे में विस्तृत विश्लेषण करने के पश्चात उन्होंने सर्वोदय का सिद्धांत दिया। भारतीय मूल के इस शब्द का अर्थ है –'सब का उदय या उत्थान'। महात्मा गांधी जी ने इस शब्द का प्रयोग ऐसी जीवन पद्धति का संकेत देने के लिए किया जो सत्य और अहिंसा के साथ–साथ परस्पर सहयोग और प्रेम पर आधारित हो। मतलब यह है कि जब अहिंसा को जीवन का नियम बना लिया जाएगा तब समाज में किसी का किसी के प्रति बेर –विरोध नहीं रहेगा और सब मिलकर सबके कल्याण के लिए कार्य करेंगे। गांधी के सर्वोदय के विचारों में परस्पर सहयोग, विश्वास और समानता आधारित समाज का निर्माण करना है। जिसमें सभी व्यक्तियों को सामाजिक आर्थिक राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से ऊपर उठना है। इस प्रकार महात्मा गांधी सर्वोदय के सिद्धांत पर समाज में सामाजिक क्रांति के पक्षधर हैं। जिसमें बिना किसी हिंसा आधारित तौर तरीकों से समाज में न्याय और सामाजिक समानता स्थापित की जा सकती है।

कार्ल मार्क्स ने साम्यवाद को ऐसी व्यवस्था के रूप में विरुपित किया है, जिसके अंतर्गत सर्वहारा वर्ग क्रांति के माध्यम से पूंजीवादी राज्य को उखाड़ फेंकेगा। मार्क्स नें कल्पना की है की, साम्यवादी अवस्था में समाज में राज्य और वर्ग व्यवस्था समाप्त हो जाएगी। पूंजीवादी शासको के स्थान पर सरकार की बागडोर सर्वहारावर्ग वर्ग के पास होगी। इस संक्रमणकालीन अवस्था में उत्पादन के साधनों और भौतिक संसाधनों का पुनर्वितरण किया जाएगा। इस प्रकार मार्क्स ने साम्यवादी समाज की स्थापना में निजी संपत्ति की समाप्ति तथा पूंजीवादी व्यवस्था के स्थान पर उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का मार्ग सुझाया है। मार्क्स नें कल्पना की है कि, इस अवस्था में सारी सामाजिक तथा आर्थिक असमानता समाप्त हो जाएंगी।

साध्य और साधन

मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार साधनों की परवाह किए बिना साध्य पर ध्यान रखना चाहिए। मार्क्स ने अपने वर्ग विहीन और राज्य विहीन समाज की स्थापना के लिए सर्वहारा वर्ग के लिए साधन के रूप में केवल क्रांति का मार्ग सुझाया है। मार्क्सवादियों के अनुसार पूंजीवादी व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन के लिए वार्तालाप तथा शांति समझौते बेकार की बातें हैं। साम्यवादी राज्य की स्थापना के

लिए केवल क्रांति ही एकमात्र उपाय है। जिससे राज्य के शोषणकारी स्वरूप को बदलकर सर्वहारा वर्ग का शासन स्थापित किया जा सकता है। इस प्रकार मार्क्सवादी विचारधारा में साध्य की प्राप्ति हेतु साधनों की पवित्रता का कोई स्थान नजर नहीं आता है।
इसके विपरीत गांधीवादी विचारधारा के अनुसार जब तक साधन पवित्र नहीं होंगे साध्य की प्राप्ति नहीं की जा सकती है। उनके अनुसार साध्य और साधन दोनों का व्यावहारिक पक्ष के साथ–साथ नैतिक पक्ष भी उचित होना चाहिए। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में गांधी जी के समक्ष कई बार साध्य और साधनों की पवित्रता का प्रश्न सामने आया। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के समय जब ब्रिटेन विश्व युद्ध में शामिल था, तब राष्ट्रवादी नेताओं ने गांधी जी के समक्ष प्रस्ताव रखा कि हमें अब सरकार का सहयोग नहीं करना चाहिए। लेकिन गांधी जी ने उनकी मांगों को अस्वीकार कर दिया। जब भी उनके आंदोलन में हिंसात्मक घटनाएं हुई उन्होंने उन आंदोलनों को स्थगित कर दिया। उनका मानना था की हिंसात्मक साधनों से लंबे समय तक लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती है। गांधीवादी विचारधारा के अनुसार साधन और साध्य दोनों का उचित होना अनिवार्य है।

निष्कर्ष

गांधीवादी तथा मार्क्सवादी विचारधाराओं के तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि गांधीवादी विचारधारा अध्यात्मवाद और नैतिक व्यक्तिवाद पर आधारित है। जबकि मार्क्सवादी दृष्टिकोण भौतिकवाद और वैज्ञानिक समाजवाद पर जोर देता है । गांधीवादी विचारधारा में धर्म को सकारात्मक तथा नैतिक उन्नति में सहायक माना है। इसके विपरीत कार्ल मार्क्स ने धर्म को जनसाधारण के लिए नशा बताया है। दोनों ही विद्वानों ने राज्य को शोषणकारी यंत्र बताया है तथा राज्य के वर्तमान स्वरूप को अनैतिक घोषित किया है। गांधी जी ने इस व्यवस्था में परिवर्तन के लिए सत्य और अहिंसा का मार्ग बताया है, दूसरी तरफ कार्ल मार्क्स ने पूंजीवाद के उन्मूलन के लिए सर्वहारा वर्ग को क्रांति का रास्ता दिखाया है। दोनों विचारधाराओं में ऐसे भावी समाज की परिकल्पना की गई है जो वर्ग विहीन तथा समानता पर आधारित हो, जिसके अंतर्गत हर एक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार काम करें और योग्यता के अनुसार संसाधनों का बंटवारा किया जाए। गांधी जी मार्क्सवादी विचारधारा से कुछ मामले में आगे निकल गए हैं। साध्य और साधनों के बारे में बात करते हुए गांधी जी हमेशा लक्ष्य की प्राप्ति में उचित साधनों की बात करते हैं। विकास के मामले में मशीनीकरण तथा अत्यधिक प्रौद्योगिकी का भी विरोध करते हैं। इन सब मतभेदों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि गांधी जी और मार्क्स के विचारों में तात्विक अंतर है। हालांकि ये दोनों विद्वान मानवता के लिए अलग–अलग रास्ते दिखाते हैं। गांधी जी नैतिकता से प्रेरित राजनीति के समर्थक हैं। गांधीजी के आचार–विचार का दृष्टिकोण व्यापक और सार्वभौमिक प्रकृति का है। इस प्रकार मार्क्स ने वर्ग संघर्ष और समाजवादी क्रांति का समर्थन किया है। मार्क्स समाज की आर्थिक संरचना पर अपना पूरा सिद्धांत विकसित करना चाहते हैं। वे भौतिकवादी हैं इसलिए वे इतिहास की भौतिकवादी और आर्थिक व्याख्या करते हैं। भारत जैसे देश में गांधी जी की शिक्षाओं का अपना स्थान है जिसकी अनदेखी नहीं की जा सकती वहीं दूसरी तरफ कार्ल मार्क्स ने इतिहास की भौतिकवादी और आर्थिक व्याख्या के द्वारा शोषित समाज को केंद्र बिंदु बनाया है।

संदर्भः

1. अलथुसर, एल, 'फॉर मार्क्स', एलेन लेन, लंदन, 1969.
2. अंड्रेस, सी. एफ., 'महात्मा गांधी के विचार', एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1947
3. मशरू वाला, के. जी., 'गांधी एंड मार्क्स', नवजीवन प्रेस अहमदाबाद, 1951
4. बरुआ, मनीषा, 'रिलिजन एंड गांधियन फिलॉसफी', आकांक्षा पब्लिशिंग हाउस, न्यू दिल्ली 2002
5. लुक्स, एस. 'मार्क्सिज्म एंड मोरालिटी', ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड 1985
6. पारीख, उ., 'गांधीवाद का सामाजिक दर्शन' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1991
7. राघवन, वी. 'गांधी वर्सेस मार्क्स', प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 2008
8. गाबा, औ.पी., 'राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा', मयूर पेपरबैक्स, नोएडा 1996